Registered Trademark

Editor

Dr.Bapu G.Gholap

ISSN 2394-5303

Printing Area®

Peer reviewed International Refereed Journal

Issue-86, Vol-04, February 2022

Scanned with ACE Scanner

27) दर्शन का अविर्भाव, सामान्य परिचय एवं प्राच्य वर्गीकरण
वितेश कुमार, गोपाल शर्मा ||126

28) भारतीय महिलाओं की स्मार्ट बचत, बढ़ते निवेश की और.....
शीतल जैन, ग्वालियर ||129

29) किन्नरों की परम्परा के परिप्रेक्ष्य में (भाग एक)
डॉ. विलास कांबळे, शिरुर (ताज.) जि.लातूर ||131

30) ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में हथकरघा उद्योग
सुरेन्द्र कुमार, बलिया ||136

31) भारत में मानवाधिकारों का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन
डॉ. नीरज कुमार, डॉ. अनिल कुमार, लॉवर मेरठ (उत्तर प्रदेश) ||141

32) साझा सरकार के सैद्धांतिक पक्ष : एक विवेचनात्मक अध्ययन
डॉ. मन मोहन सिंह, अमरोहा ||146

33) ऑनलाइन शिक्षण प्रक्रिया के संदर्भ में बेसिक स्तर के अध्यापकों में उनकी.....
डॉ. रामधनी सिंह, प्रो. धनंजय यादव, प्रयागराज ||152

34) राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार में विद्वानों की भूमिका
डॉ. शिवाजी भदरगे, हिमायत नगर जिला नांदेड़ ||157

35) कोरोना काल में बाल श्रमिकों की बढ़ती हुई आर्थिक गतिविधियों .....
पुष्पेन्द्र प्रताप सिंह, ग्वालियर (म.प्र.) ||160

36) सूचना का अधिकार का विश्लेषणात्मक अध्ययन
डॉ. अरूणा पाठॅक, जबलपुर ||163

37) महिलाओं के सशक्लिकरण हेतु विधिक प्रावधान सुझावात्मक अध्ययन
श्रीमती अर्चना साने, जबलपुर ||167

38) लोकपाल विधेयक आंदोलन एवं वर्तमान परिदृश्य
डॉ. प्रीतम सिंह ठाकुर, छिंदवाडा मध्यप्रदेश ||171

39) ''गांधी और भारत'' ''कुछ विचारणीय पक्ष''
डॉ. आनंद यादव, बिलासपुर (छ.ग.) ||178

http://www.printingarea...

Scanned with ACE Scanner

ISSN: 2394 5303 | Impact Factor 8.012(IIJIF) | Printing Area® Peer-Reviewed International Journal | February 2022 Issue-86, Vol-04 | 0157

34

राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार में विद्वानों की भूमिका

डॉ. शिवाजी भदरगे
सहायक प्राध्यापक एवं हिन्दी विभाग प्रमुख,
हुतात्मा जयवंतराव पाटील महाविद्यालय, हिमायत नगर जिला नांदेड़

वर्तमान हिंदी हमारी मौलिक वैश्विकभाषा बननेजा रही है। हमारे अपने देश मेंहिन्दीकोराष्ट्रभाषाका दर्जा दिया गया है। हिंदी को एक प्रादेशिक भाषा के है सियत देखा जाता है। यह सर्वमान्य है कि, भारत की राजभाषा बनने में हिंदी को कहीं शताब्दीयां लगी। हिंदी को स्वतंत्रता संग्राम केनेताओं ने महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हिंदी के विकास के लिए उन विद्वानों चिंतको और नेताओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जोज्यादातर हिंदी प्रदेश के ही थे। हिंदी को राष्ट्रभाषा बनने का सर्वप्रथम मानस बंगाल में उदित हुआ र वहां से होकर पूरे देशके नेताओं मेंफैला। देश के लिए एक राष्ट्र भाषा हिंदी कल्पना करने वाले सबसे पहले महत्वपूर्ण और अग्रणी विद्वान बंगाल के श्री केशवचंद्रसेन माने जाते है।

१) श्री केशवचंद्रसेन

इन्होंने सन १९७३ में अपने पत्र 'सुलभ समाचार'बंगाल में लिखा था। उसमें उन्होंने कहा था कि, ''यदि भाषा एकन होने पर भारतवर्ष में एकता न हो तो उसका उपाय क्या है? समस्त भारतवर्ष में एक भाषा का प्रयोग करना इसका उपाय है। इस समय भारत में जितनीभी भाषाएं प्रचलित है। उनमें हिंदी भाषा प्राय: सर्वत्र प्रचलित है। उस हिन्दी भाषा को यदी भारतवर्ष की एक मातृभाषा बनाया जाए तो आना यहां से यह एकता शीघ्र ही संपन्न हो सकती है।'' इसी भाषा के कारण भारत में एकता बनीं और अनेक राष्ट्रीय तथा प्रांतीय नेताओं ने मुक्त कंठ से हिंदी का समर्थन किया।

२) लोकमान्य बालगंगाधर तिलक

''स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, जिसे मै प्राप्त करके रहूंगा।'' इस नारे को गुंजाने वाले हमारे राष्ट्रीय आंदोलन के सक्रिय और जहाल गुटके बड़े नेता बाल गंगाधर तिलक का स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में महत्वपूर्ण योगदान तोहै ही परन्तु भाषा के बारे में तिलक का विचार भी महत्वपूर्ण है।उनका कहना था कि, हिंदी ही एकमात्र राष्ट्रभाषा हो सकती है। हिंदी का समर्थन करते हुए उन्होंने 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' में लिखा था कि, ''यह आंदोलन उत्तर भारत में केवल एक सर्वमान्य लिपि के प्रचारके लिए नहीं है, जिसे मै राष्ट्रीय आंदोलन कहूंगा और जिसका उद्देश्य समस्त भारतवर्ष के लिए एक राष्ट्रीय भाषा की स्थापना करना है, क्योंकि सबके लिए समान भाषा राष्ट्रीयता का महत्वपूर्ण अंग है, अतएव यदि आप किसी राष्ट्र के लोगों को एक दूसरे के निकट लाना चाहे तो सबके लिए समान भाषा से बढ़कर सशक्त अन्य कोई बल नहीं।'वे हिंदी को राष्ट्रभाषा मानते थे वहां देवनागरी को हिंदी लिपि के रूप में स्वीकार करते थे। उन्होंने राष्ट्रीय चेतना को बल देने के लिए १९३० ईस्वी में 'हिंदी केसरी' नामक पत्रिका का प्रकाशन किया और यह बात जनसाधारण लोगों तक पहुंचाने के लिए हिंदी ही एक सरल और सशक्त भाषाका माध्यम है ऐसा उनका मानना था और हिंदी का प्रचलन उन्होंने किया। तिलक जी ने अंग्रेजी की वजह हिंदी में भाषण देने की परंपरा का आदर्श निर्माण किया।

३) महात्मा गांधी

हमारे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दूसरे बड़े अग्रणी नरम गुट के सक्रिय नेता, जिन्हें पूरा भारत देश बापू के रूप में मानता है। महात्मा गांधी नेहिन्दी भाषा को राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण स्थान दिया है। आरंभ से ही हिंदी को स्वतंत्रता संग्राम की भाषा बनने के लिए उन्होंने अथक परिश्रम किए। उनका मानना था कि ''पराधीनता चाहिए राजनीति क्षेत्र की हो अथवा भाषाई क्षेत्र की, दोनों ही एक दूसरे की पूरक और पीढ़ी दर पीढ़ी सदा परमुखापेक्षी बनाए रखने वाली है।'' सन १९१७ में गांधी जी ने एक परिपत्र निकालकर हिंदी सीखने के कार्यों का श्री गणेशा किया। उनकी प्रेरणा से

Scanned with ACE Scanner

१९२५ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने यह प्रस्ताव पारित किया कि कांग्रेसका, कांग्रेस की समिति, कार्यकारिणी समिति का कामकाज आमतौर पर हिंदुस्तानी में चलाया जाएगा। इसी का परिणामस्वरूप कामकाज आमतौर हिंदुस्तानी में चलाया जाएगा इसी का परिणाम यह हुआ कि, १९२५ में अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन भरतपुर में हुआ, जिसकी अध्यक्षता गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर ने की और उन्होंने सर्वप्रथम हिंदी में बोलकर हिंदी का समर्थन किया राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने विभिन्न राज्यों में हिंदी का प्रचार प्रसार करने के लिए अपने कहीं नेताओं को प्रेरित किया और अलग—अलग राज्यों में भेज दिया। खुद उन्होंने अपने बेटे श्री देवदास गांधी को हिंदी प्रचार के लिए भारत के दक्षिण भारत के दक्षिणी राज्य में भेज दिया था। आजादी के इस मुहिम में ऐसे पुनीत कर्तव्य मानकर विभिन्न राज्यों में विभिन्न हिंदी प्रचारक गए और वहां उन्होंने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दियाऔर राष्ट्रीय आंदोलन में शिरकत करते हुए राष्ट्रीय चेतना से युक्त हमारी हिंदी के प्रचारक आजादी में और आजादी के बाद भी लोगों को जागृत करने के लिए हिंदी का प्रचार प्रसार करते हुए लोगों के बीच चले गए। गांधीजी के प्रयत्नों से तमिलनाडु में हिंदी के प्रति उत्साह प्रभावित हुआ कि प्रांत के सभी प्रभावशाली नेता हिंदी का समर्थन करने लगे। यह वह समय था जब चक्रवर्ती राजगोपालाचारी जैसेनेतानेंहिन्दी भाषा को उपयोग में लाया।

४) लाला लाजपतराय:

पंजाब केसरी के नाम से प्रसिद्ध लाला लाजपत राय एक महान देशभक्त, शिक्षाशास्त्री ही नहीं एक प्रभावशाली पत्रकार भी थे। उन्होंने पंजाब राज्य में हिंदी के प्रसार का पूरा जिम्मा उठायाथा। जब उर्दूऔर हिंदी का विवाद जोरों से चल रहा था तब उन्होंने हिंदी का समर्थन किया और उनके प्रयास से पंजाब के शिक्षा क्षेत्र में हिंदी को स्थान मिला। उन्होंने अनेक शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की उसमें हिंदी का अध्ययन अनिवार्य बनाया। उनकी प्रेरणा से ही पंजाब विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में हिंदी को स्थान दिया गया। इसलिए हिंदी भाषा को पंजाब या उत्तर भारत में प्रसारित करने में लाला लाजपत राय बहुत बड़ा योगदान रहा है।

५) पुरूषोत्तम दास टंडन:

टंडनजी ने हिंदी की सेवा भरपूर की है। वह हिंदी साहित्य सम्मेलन के सर्वेसर्वा थे। उनसे ही हिंदी का प्रचार कार्य गति से आगे बढ़ा। उन्होंने अपना सारा जीवन हिंदी सेवा और साहित्य की सेवा में समर्पित किया। हिंदी को राष्ट्रभाषा में का सर्वोत्तम स्थान देने में उन्होंने प्रयास किया १० अक्टूबर १९१० को वाराणसी के नागरी प्रचारिणी सभा के प्रांगण में हिंदी साहित्य सम्मेलन की स्थापना की। फिर १९१८ में उन्होंने हिंदी विद्यापीठ और १९४७ में हिंदी रक्षक दल की स्थापना की। टंडन जी ने हिंदी को देश की आजादी प्राप्त करने का और आजादी को बनाए रखने का साधन मानाथा। उन्होंने हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा का दर्जा देने के लिए अनेक प्रयास किए। अपने अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने बहुत ही रोचक ढंग से हिंदी भाषा का महत्व बताया और हिंदी भाषा के प्रति देशवासियों के मन में प्रेम जगाया। संपूर्ण देश में हिंदी भाषा प्रसारित किया। हिंदी के बगैर हम उन्नति के शिखर पर पहुंच नहीं सकते। ऐसा उनका मानना था।

६) डॉ. राजेन्द्र प्रसाद:

हमारे देश के देशरत्न डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी का नाम आदर्श लिया जाता है। उन्होंने हिंदी सेवा से अपना परिचय दिया है। भारतीय संविधान सभा के अध्यक्ष होनेके कारण उन्होंने हिंदी को उचित स्थान दिलाने में बहुत बड़ा योगदान दिया। उन्होंने ही भारतीय संविधान की भारतीय भाषाओं में परिभाषित कोषको तैयार करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। भारत के प्रथम राष्ट्रपति पद से उन्होंने जो हिंदी की सेवा की उसका विशेष महत्व है। उनके कार्यकाल में ही हिन्दी भाषा को राजभाषा के रूप में मान्यता मिले इसलिए उन्होंने प्रयास किया।

७) काका कालेलकर:

हिंदी के प्रचार प्रसार में काका कालेलकर जी ने अतुल्य योगदान दिया। इसलिए उनका नाम आदर्श लिया जाता है। दक्षिण भारत में हिंदी का प्रचार करने वालों में वे प्रमुख थे। वे गुजरात में रहकर हिंदी भाषा

Scanned with ACE Scanner

ISSN: 2394 5303 | Impact Factor 8.012(IIJIF) | Printing Area® Peer-Reviewed International Journal | February 2022 Issue-86, Vol-04 | 0159

के प्रचार को उन्होंने आगे बढ़ाया। उनका मानना था कि, ''यदि भारत में प्रजा का राज चलाना है, तो वह जनता की भाषा में चलाना होगा।'' इसी तरह उन्होंने हिंदी भाषा की वकालत की। १९४२ में वर्धा में जब हिंदुस्तानी प्रचार सभा की स्थापना हुई तो वह हिंदुस्तानी के प्रचार प्रसार के लिए पूरे देश का भ्रमण उन्होंने किया था। उन्होंने हिंदी के प्रचार कार्यक्रम को राष्ट्रीय कार्यक्रम के रूप में पोषित किया था। और सन १९३८ में दक्षिण भारत में हिंदी प्रचार सभा के अधिवेशन में खुलकर ऐलान किया कि, अपना संपूर्ण जीवन हिंदी के विकास और प्रसार में लगा दूंगा।

८) सेठ गोविंददास:

राष्ट्रभाषा के प्रचार प्रसार में सेठ गोविंद दास जी को राष्ट्र का प्रहरी माना जाता है। उन्हें हम कभी भुल नहीं पाते हैं। अपनेयुवा काल में ही उन्होंने अनेक हिंदी की पत्रिकाएं चलाई। वह हिंदी के प्रति बहुत ही आकर्षित थे। १९४९ में जब भारतीय संविधान सभा की बहस चल रही थी, तब उन्होंने स्पष्ट किया था कि, ''मैं व्यक्तिगत रूप से यह चाहता हूं कि, संविधान मौलिक रूप में हमारी मुख्य भाषा में हो, अंग्रेजी में नहीं, जिससे हमारे भावी न्यायाधीश अपनी भाषा पर निर्भर हो सके, विदेशी भाषा पर नहीं।'' भारतीय लोकसभा के सदस्य के रूप में उन्होंने हिंदी के प्रसार कार्य को आगे बढ़ाया और हिंदी को राजभाषा का स्थान दिलाने में भी उन्होंने महत्त्वपूर्ण प्रयास किए। उन्होंने हिंदी की विशेषता को जानकर इस भाषा को देश के लिए मानक भाषा के रूप में चुना और इसी कारण १९६३ में उन्हें अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन का अध्यक्ष चुना गया।

सारांश:

हमारे देश में हिंदी को राष्ट्रभाषा का स्थान दिलाने में उपर्युक्त सभी विद्वानों के अलावा अनेक नाम भी शामिल हैं। जिसमें पंडित वर्ष १९२७ ई. में सी. राजगोपालाचारी ने दक्षिण वालों को हिंदी सीखने की सलाह दी और कहा, ''हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा तो है ही, यही जनतंत्रात्मक भारत में राजभाषा भी होगी।''वर्ष १९२८ ई. में प्रस्तुत नेहरू रिपोर्ट में भाषा सम्बन्धी सिफारिश में कहा गया था, 'देवनागरी अथवा फारसी में लिखी जाने वाली हिन्दुस्तानी भारत की राष्ट्रभाषा होगी, परन्तु कुछ समय के लिए अंग्रेजी का उपयोग जारी रहेगा।'' सिवाय 'देवनागरी या फारसी' की जगह 'देवनागरी' तथा 'हिन्दुस्तानी' की जगह 'हिंदी' रख देने के अंततः स्वतंत्र भारत के संविधान में इसी मत को अपना लिया गया। वर्ष १९२९ ई. में सुभाषचंद्र बोस ने कहा, ''प्रान्तीय ईर्ष्यादृद्वेष को दूर करने में जितनी सहायता इस हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज से नहीं मिल सकती। अपनी प्रान्तीय भाषाओं की भरपूर उन्नति कीजिए, उसमें कोई बाधा नहीं डालना चाहता और न हम किसी की बाधा को सहन ही कर सकते हैं। पर सारे प्रान्तों की सार्वजनिक भाषा का पद हिंदी या हिन्दुस्तानी को ही मिला है।''

वर्ष १९३१ ई. में गाँधीजी ने लिखा, ''यदि स्वराज्य अंगेजी पढ़े भारतवासियों का है और केवल उनके लिए है तो सम्पर्क भाषा अवश्य अंग्रेजी होगी। यदि वह करोड़ों भूखे लोगों, करोड़ों निरक्षर लोगों, निरक्षर स्त्रियों, सताए हुए अछूतों के लिए है तो सम्पर्क भाषा केवल हिंदी हो सकती है।'' गाँधीजी जनता की बात जनता की भाषा में करने के पक्षधर थे। वर्ष १९३६ ई. में गाँधीजी ने कहा, ''अगर हिन्दुस्तान को सचमुच आगे बढ़ना है तो चाहे कोई माने या न माने राष्ट्रभाषा तो हिंदी ही बन सकती है, क्योंकि जो स्थान हिंदी को प्राप्त है, वह किसी और भाषा को नहीं मिल सकता है।''वर्ष १९३७ ई. में देश के कुछ राज्यों में कांग्रेस मंत्रिमंडल गठित हुआ। इन राज्यों में हिंदी की पढ़ाई को प्रोत्साहित करने का संकल्प लिया गया। जैसे जैसे स्वतंत्रता संग्राम तीव्रतम होता गया वैसेद्वैसे हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने का आंदोलन जोर पकड़ता गया। २०वीं सदी के चौथे दशक तक हिंदी राष्ट्रभाषा के रूप में आम सहमति प्राप्त कर चुकी थी। वर्ष १९४२ से १९४५ का समय ऐसा था जब देश में स्वतंत्रता की लहर सबसे अधिक तीव्र थी, तब राष्ट्रभाषा से ओतद्प्रोत जितनी रचनाएँ हिंदी में लिखी गई उतनी शायद किसी और भाषा में इतने व्यापक रूप से कभी नहीं लिखी गई। राष्ट्रभाषा प्रचार के साथ राष्ट्रीयता के प्रबल हो जाने पर अंग्रेजों को भारत छोड़ना पड़ा। मदन मोहन मालवीयजी का भी नाम अग्रगण्य रहा है।

इन्होंनेभी हिंदी हिंदू और हिंदुस्तानीकी सेवा की। हिंदी के प्रचार एवं प्रसार और स्वरूप निर्धारण में उन्होंने अभूतपूर्व कार्य किया। अभ्युदय और हिंदुस्तान पत्रिका का भी उन्होंने संपादन किया। हिंदी आंदोलन के अग्रणी नेता होने के साथ-साथ उन्होंने अनेक दैनिक समाचार पत्र भी चलाए। यहां हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं उसे राजभाषा के मंजिल तक पहुंचानेवाले कुछ प्रमुख राष्ट्रीय नेताओं के योगदान का अत्यंत संक्षिप्त उल्लेख किया है। इसके अलावा अनेक नेताओंने हिंदी का प्रबल समर्थन किया और हिंदी को विकसित करने में अपना बहुमूल्य योगदान भी दिया। तब कहीं जाकर हमारे देश की धरोहर और संस्कृति पहचान दिलाने वाली हिंदी को राष्ट्रभाषाके पद पर स्थान मिला।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

१) भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभागय 'राजभाषा भारती'

२) कर्मचारी राज्य बीमा निगमय 'राजभाषा प्रश्नोत्तरे'

३) देवेंद्र नाथ शर्माय 'राष्ट्रभाषा हिंदी समस्याएं और समाधान'

□□□

35

कोरोना काल में बाल श्रमिकों की बढ़ती हुई आर्थिक गतिविधियों का विवेचनात्मक अध्ययन (ग्वालियर जिले के विशेष संदर्भ में)

पुष्पेन्द्र प्रताप सिंह

शोध छात्र (राजनीति शास्त्र)

जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

शोध सार

शोध सार— कोरोना काल में बाल श्रमिकों की आर्थिक स्थिति अति दयनीय हो गयी थी। उसका प्रमुख कारण अधिकतर व्यापारिक प्रतिष्ठान बंद रहते थे, आवागमन के साधनों पर रोक लगी हुई थी, बाजार कम समय के लिए खुलते और बंद होते थे एवं अधिकतर लोग भय के कारण अपने घरों में निवासरत थे। जिस कारण से लोगों की आर्थिक गतिविधियाँ नियमित एवं नियोजित हुई। ग्वालियर जिले के ग्रामीण एवं शहरी परिवेश में रहने वाले बाल श्रमिक प्रभावित हुए; जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में संकुचन एवं फैलाव के स्वरूप ने अपना स्थायित्व बना लिया था। कोरोना काल में कई प्रकार की आर्थिक पाबंदियाँ लगी हुई थी; जिससे बाल श्रमिकों का भौतिक एवं आंशिक विकास रुक गया था। और उनका प्रतीकात्मक स्वरूप सृजनात्मक न होकर अव्यवहारिक और सीमित रह गया था। ग्वालियर जिले के सभी तहसीलों के विकास खंडो में बाल श्रमिक अपने जीवन को यापन करने में काफी विषमताओं एवं कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था। जिस कारण से उनका जीविकोपार्जन प्रभावित होने के साथ—साथ उनकी जीवन शैली भी प्रभावित हुई।

मुख्य बिंदु— आवागमन, गतिविधियाँ, परिवेश, संकुचन, विवेचन, प्रतीकात्मक, महामारी, सृजनात्मक, अव्यवहारिक, विषमताये एवं कठिनाइयाँ आदि

Scanned with ACE Scanner